वैयक्तिक विभिन्नताओं के कारण
(Causes of Individual Differences)

वैयक्तिक विभिन्नताओं के प्रमुख कारण निम्नलिखित हैं—

(1) वंशानुक्रम का प्रभाव (Influence of Heredity)—मैक्डूगल, पीयरसन, गाल्टन आदि मनोवैज्ञानिकों के अनुसार, वंशानुक्रम ही वैयक्तिक विभिन्नताओं का मुख्य कारण है। व्यक्ति को उसका शरीर, उसकी आकृति, उसका रूप-रंग आदि वंश-परम्परा से प्राप्त होता है। माता-पिता के बीज का प्रभाव न केवल बालक के शरीर पर पड़ता है अपितु उसके मानसिक संस्कारों पर भी पड़ता है। प्रायः तीव्र बुद्धि के माता-पिता की सन्तानें तीव्र बुद्धि वाली और मन्द बुद्धि के माता-पिता की संतानें मन्द बुद्धि वाली होती है। **मन (Munn)** के शब्दों में, *"हमारा सबका जीवन एक ही प्रकार आरम्भ होता है फिर इसका क्या कारण है कि हम जैसे-जैसे बड़े होते जाते हैं, हममें अन्तर होता जाता है? इसका एक उत्तर यह है कि हमारा सबका वंशानुक्रम भिन्न होता है।"* वंशानुक्रम का प्रभाव व्यक्ति पर पड़ता है लेकिन यह कहना उचित नहीं कि केवल वंशानुक्रम ही वैयक्तिक विभिन्नताओं का एकमात्र कारण है। यदि ऐसा होता तो एक ही माता-पिता की सन्तानों में भिन्नता न होती।

(2) पर्यावरण का प्रभाव (Influence of Environment)—पर्यावरण का वैयक्तिक विभिन्नताओं पर गहरा प्रभाव पड़ता है। पर्यावरण दो प्रकार का होता है—

(क) प्राकृतिक पर्यावरण और **(ख) सामाजिक पर्यावरण**। जिस स्थान का प्राकृतिक वातावरण गर्म होता है वहाँ के व्यक्ति काले, आलसी और अस्वस्थ होते हैं और जहाँ का वातावरण ठंडा होता है वहाँ के लोग गोरे, परिश्रमी एवं बुद्धिमान होते हैं। इसी प्रकार सामाजिक पर्यावरण का प्रभाव पड़ता है। व्यक्ति

जिस प्रकार के सामाजिक पर्यावरण में रहता है, उसी के अनुरूप उसका रहन-सहन, आचार-विचार व्यवहार हो जाता है। यदि हिन्दी भाषा परिवार का बालक सिंधी, मद्रासी या बंगाली परिवार के बालकों के साथ रहता है तो उसका रहन-सहन, भाषा आदि उन्हीं के अनुरूप हो जाती है। इस प्रकार आस-पड़ोस की परिस्थितियाँ बालक में विभिन्नतायें लाती हैं।

(3) जाति व देश का प्रभाव (Influence of Race and Nationality)—वैयक्तिक विभिन्नतायें जातीय और राष्ट्रीय आधार पर भी निर्भर करती हैं। जो व्यक्ति जिस जाति व देश में पैदा होता है वह उसकी विशेषताओं को लिये हुये होता है। ब्राह्मण और क्षत्रिय जाति में उत्पन्न व्यक्ति में क्रमशः अध्ययनशीलता और युद्ध-प्रियता के गुण पाये जाते हैं। हिन्दू परिवार में जन्म लेने वाला बालक जिन बातों को सीख जाता है, उन बातों को मुस्लिम या ईसाई परिवार में जन्म लेने वाला बालक नहीं सीख पाता। इसी प्रकार भिन्न-भिन्न राष्ट्रों के व्यक्तियों के स्वभाव, रुचि, शारीरिक और मानसिक स्थिति व व्यक्तित्व में जो अन्तर पाया जाता है वह उन देशों की विभिन्नताओं के कारण ही होता है।

(4) आर्थिक स्थिति व शिक्षा का प्रभाव (Influence of Economic Condition and Education)—परिवार की आर्थिक स्थिति व शिक्षा के कारण भी वैयक्तिक विभिन्नतायें पाई जाती हैं। माता-पिता की आर्थिक स्थिति, रहन-सहन, व्यवसाय और शिक्षा बालकों पर गहरा प्रभाव डालती है। जिन परिवारों की आर्थिक स्थिति अच्छी होती है, रहन-सहन का स्तर ऊँचा होता है, शैक्षिक वातावरण होता है, वहाँ के बालकों के व्यक्तित्व का विकास अच्छा होता है और जिन परिवारों में गरीबी होती है, माता-पिता शिक्षित नहीं होते, वहाँ के बालक शिक्षा ग्रहण नहीं कर पाते और अच्छी आदतें नहीं सीख पाते। फलतः समान बुद्धि के होते हुये भी इन बालकों में विभिन्नतायें होती हैं।

(5) लिंग सम्बन्धी प्रभाव (Influence of Sex Differences)—बालक और बालिकाओं में शारीरिक व मानसिक विभिन्नतायें पाई जाती हैं। बालकों की अपेक्षा बालिकायें एक-दो वर्ष पूर्व परिपक्वता प्राप्त कर लेती है। बालिकायें कोमल, दयालु, ममतामयी, स्नेहमयी, लज्जालु और शान्त प्रकृति की होती हैं जबकि बालक कठोर, वीर, क्रोधी, चतुर, साहसी व कुशल होते हैं। बालकों में शारीरिक कार्य करने की क्षमता, अंकगणित की योग्यता और कल्पनाओं की बाहुल्यता होती है, जबकि बालिकायें स्मृति में, कला की योग्यताओं में और घरेलू कार्यों में अधिक अच्छी होती है।

... विभिन्नता का अधिगम पर प्रभाव